UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL

ISSN 2229-3620

GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

SIP

शोध संचार बुलेटिन

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

★ Vol. 10 ★ Issue 39 ★ July to September 2020

Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Sharma

D.Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

CONTENTS

S. No.	Topic		Page No.
1.	संत गरीबदास : व्यक्ति और वाणी	डॉ. सुनील कुमार	1
2.	स्थापत्य कला का विकास : मध्यकालीन भारत के संदर्भ में	डॉ० मो० मंजर अली	6
3.	मानवेतर–प्रेम की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति : मेरा परिवार	डॉ० बेबी कुमारी	11
4.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग एवं उसकी कार्य प्रणाली	डॉ0 दिलीप कुमार	15
5.	स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सम्बन्ध	डॉ0 नवीन कुमार	19
6.	नेपाली के काव्य में प्रेम के विविध आयाम	डॉ0 अभिषेक रंजन	21
7.	रमणिका गुप्ता : स्त्री संघर्ष के राजनीतिक और वैयक्ति आयाम	डॉ. नूतन कुमारी	25
8.	दलित जीवन का दस्तावेज : मुर्दहिया	डॉ. रवि रंजन	29
9.	कन्नौज की साहित्यिक साधना का विकासगत् अध्ययन	डॉ0 कैलाश नाथ	33
10.	सुरेश यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	अर्शदीप कौर डॉ. सुनील कुमार	35
11.	गांधीवादी नीतियों की प्रासंगिकता (एक विवेचन)	डॉ. कुसुम कुंज मालाकार	40
12.	''रामकथा में अंगिका और भोजपुरी के विवाह संस्कार गीतों में समानता''	डॉ0 कुमारी स्वाति	44
13.	'वाजश्रवा के बहाने' में मिथकीय प्रयोग	अमरेन्द्र पाण्डेय	48
14.	सूरदास और स्वप्न विज्ञान	डॉ. त्र्यम्बक नाथ त्रिपाठी	52
15.	राँची जिला के मुख्य जनजातियों में राजनीतिक जागरूकता, राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान तथा राजनीतिक सहभागिता का एक भौगोलिक अध्ययन	भुवनेश्वर कुमार मण्डल	57
16.	हरदोई जनपद में कृषि उत्पादकता तथा कृषि उत्पादकता क्षेत्र का भौगोलिक अध्ययन 2006 के संदर्भ में	डॉ. जकील अहमद	62
17.	बिहार में जैविक खेती की संभावनाएं एवं चुनौतियां	संतोष कुमार	67
18.	भारतीय रस सिद्धान्तः	डॉ0 प्रकाश नारायन मिश्र	72
19.	वैश्वीकरण एवं भारतीय शैक्षणिक व्यवस्थाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ0 अनिल कुमार पासवान	77
20.	वंशीधर शुक्ल के काव्य में धार्मिक चित्रण	डॉ0 आभा शुक्ला	83
21.	धर्म एवं अंतर–सभ्यात्मक संघर्ष : एक विमर्श	डॉ. अमित कुमार	87
22.	लोककथा में कथक्कड़ (कथावाचक) और श्रोता की भूमिका	संतोष कुमार	92

23.	जेंडर समानता के संदर्भ में गांधी के सोच और संस्कार	डॉ. सुप्रिया पी	96
24.	अमेरिका की अफ़गान नीति में पाकिस्तान की भूमिका	डॉ. चार्वी सिंह	99
25.	अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक उपक्रमों की भूमिका	डॉ. संजो पाण्डेय	104
26.	औपनिवेशिक भारत वर्श में उच्च शिक्षा में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम 1904, शिक्षा नीति 1913 एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय का भूमिका एवं महत्त्व	ऐश्वर्य कीर्ति लक्ष्मी	107
27.	मुस्लिम साहित्य में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समन्वय	डॉ0 उदय भान यादव	111
28.	''सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन– अंग्रेजी ग्रामर के संदर्भ में''	डॉ. संजीत कुमार साहू विद्याभूषण शर्मा	114
29.	वर्तमान उपन्यासों में 'आत्महत्या रूपी मनोविकार'	प्रो॰ राजिन्द्र पाल सिंह जोशू सुधा महला	119
30.	शोषित आदिवासी समाज और हिन्दी उपन्यास	समर बहादुर यादव	123
31.	पहाड़ों में पलायन और समकालीन हिंदी उपन्यास (उत्तराखण्ड के सम्बन्ध में)	रवि यादव	126
32.	हमारा शहर उस बरस उपन्यास में धर्मनिरपेक्षता	डॉ. कृष्णा गायकवाड	129
33.	उत्तराखण्ड राज्य के वन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका एवं वन संबधी योजनाएं	डॉ0 रीनू रानी मिश्रा	132
34.	औपनिवेशिक भारत, कुलीनता और आर्दश हिन्दू स्त्री का निर्माण (सुभद्राकुमारी चौहान की कहानियों के विशेश सन्दर्भ में)	आरती यादव	139
35.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतका अध्ययन	भरत उपाध्याय डॉ आराधना सेठी	143
36.	मारवाड़ लोक परिषद् के जन आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका (1938–1948 ई.)	डॉ. लता अग्रवाल	147
37.	वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्राचीनकालीन पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों के प्रभाव का अध्ययन	डॉ0 बीनू शुक्ला सर्वेश कुमार	152

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SIP

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 39, July-September 2020
Page Nos. 96-98

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

जेंडर समानता के संदर्भ में गांधी के सोच और संस्कार

डॉ. सुप्रिया पी*

शोध सारांश

वर्तमान भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष की असामनता एक बहुत बड़ी विडंबना है। परिवार और समाज में हर कहीं स्त्री और पुरुष के लिए दोहरे मापदंड हैं। दोनों ही अपने स्थान पर श्रेष्ठ है, दोनों को समान अवसर, समान सम्मान प्राप्त होना चाहिए। इसी जेंडर समानता को प्रस्थापित करने का प्रयास हमें करना है। आधुनिक भारत में गांधी जी के पहले राजा राममोहन रॉय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महर्षि दयानंद सरस्वती जैसे धर्म सुधारकों के अभियानों से और कई सुधार संगठनों के सामाजिक कार्यों के परिणामस्वरूप स्त्रियों के उद्धार की समस्या के प्रति पर्याप्त जनचेतना उत्पन्न हो चुकी थी। राष्ट्रीय आन्दोलन के कर्मधार गांधी जी ने इसे नई चेतना प्रदान की। इस जेंडर समानता का प्रयास उन्होंने सर्वप्रथम अपने परिवार से, अपनी सपत्नी कस्तूरबा से आरंभ किया।वे मानते थे कि स्त्रियाँ युगों से दबी हुई हैंदृकभी रिवाजों ने तो कभी नियमदृकानून ने स्त्रियों को दबोचा है। स्त्री को अपने अस्तित्व का बोध खुद होना है और पुरुष के साथ समानता से आगे बढ़ना है।

Keywords : जेंडर समानता, पुनरुत्थान, स्वावलंबी, सत्याग्रह, संवैधानिक, सविनय अवज्ञा, पिकेटिंग, स्वराज्य, जनजागरण।

विस्तृत शोधपत्र :

गांधी जी महिलाओं के पुनरुत्थान के बहुत बड़े हिमायती थे। उनके रचनात्मक कार्यक्रमों में चरखा चलाना, नशाबन्दी, ग्रामोत्थान तथा हरिजनों और महिलाओं के उत्थान के कार्यक्रमों ने राजनीतिक दासता के विरुद्ध संघर्ष के लिए एक मज़बूत आधार तैयार किया। गांधी जी ने न केवल अपने सिद्धांतों के संदर्भ में नारी को ऊपर उठाना चाहा, वरन् उनकी दुर्दशा से उन्हें मुक्ति दिलाकर उनकी सहभागिता के साथ उन्हें आम पुरुष की भाँति समानता तथा स्वतंत्रता की वकालत की। उन्होंने नारी के भीतर के सशक्त आत्मबल को पहचाना। वे कहते है– "स्त्री कौन है, इसका किसी ने विचार किया है ? वह साक्षात देवी है। वह त्याग की मूर्ति है। स्त्रियों मे ऐसी अद्‌भुत शक्ति है कि अगर वे काम करने का निश्चय कर लें और उसे लग्न से करें, तो वे किसी पहाड़ को भी हिल देने की ताकत रखती है। इतनी शक्ति उनमें भारी है। स्त्रियाँ पुरुषों की गुलाम या दासियाँ नहीं हैं, परंतु उनकी अर्धांगिनियाँ, सह–धर्मिनियाँ हैं। इसलिए पुरुषों को चाहिए कि वे स्त्रियों को अपनी मित्र समझें। स्त्री को अबला कहकर हम उस देवी का अपमान करते है।"[1]

गांधी जी ने स्त्रियों को पुरुषों से किसी भी मामले में कम नहीं माना। उन्होंने स्त्री व पुरुष को समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये माना, जिसमें एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व ही नहीं रह सकता। "महात्मा गांधी का स्त्री दृ पुरुष संबंध के बारे मे एक अनूठा और अलौकिक विचार था– वह है स्त्री–पुरुष का सहज संबंध। उनके अनुसार रूढ़ि गत परंपराओं ने स्त्रियों को एक ऐसे कठघरे मे ला खड़ा किया है, जिसे देखते और स्पर्श करते ही व्यक्ति विकारमय हो जाता है। इसी कारण स्त्रियों से दूर रहने का विचार जन्म और फलत–फूलता गया।"[2] महात्मा गांधी का मानते थे कि इन्ही कारणों से स्त्री–पुरुष संबंधों मे अ सहजता अअ गई है।

स्त्री शिक्षा को इसलिए गांधी जी महत्त्व देते थे क्योंकि वे मानते थे कि विद्या के बिना मनुष्य पशुवत है। पुरुषों की भाँति स्त्रियों के लिए भी शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक है। सह शिक्षा के बारे में गांधी जी का कहना था कि पश्चिम से यह प्रयोग सफल नहीं हुआ। यह प्रयोग पहले परिवार से शुरू करना चाहिए। परिवार में लड़के और लड़कियों को एक साथ स्वतंत्र और स्वाभाविक रूप से बढ़ना चाहिए। तब सह शिक्षा अपने आप आ जायेगी। समाज में स्त्री और पुरुष की समानता स्थापित करना, स्त्रियों को पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने की प्रेरणा देना, स्त्रियों के लिए उनकी रुचि के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था करना तथा स्त्रियों को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के मार्ग गांधी जी ने सुझाया।

गांधी जी को इस बात का पूरा विश्वास था कि आर्थिक

*संयोजिका, महिला अध्ययन केंद्र, एवं सहायक आचार्य, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय,